

मूलमन्त्रः

अथ स गीत कथां न च यथा न कर्क उक्ता परिहृत्वा नांदत मनुष्य
 आगविना आदीवर्षे नैनामन्त्रु नदध गतमानसा अथ न्मान स
 जायतु सर्वे का ल प्रथाः अथ नान हि दा ष सु ध द ति सर्वे द षा प्र था
 अथ नो अथ मन्त्रु नैत न्य प्र कृत ष न नी काम क ला र्थ क न व त्स र
 दि व स्य काम वी क न्नु यू ढी दि ग्य न न कृ य ता न न
 पु वा ध वा म स्का य रा दा वा यू द्ध कि ण म् वा रे धि

८७ त्रिपुरसुन्दरी कवच प्रोडशा

सोऽथागुचगसदयसुक्रां नारिदशंक। कनक्रां क्रीं श्रीं मना रुवा
 रुसऽपायात्महादवी यनोनिष्क सयवता विऊयामङ्गलादूनी कल्याणी
 रुगमाहिनी। द्वालायमाहिनी विऊ सर्वदायागुमां गिता॥ ॐ श्री वं क
 वनंद विदवानामपि दुस्तु रं नवप्रीत्यामयाख्या नं गमयनीयं प्रस
 त्र॥ ॐ दं नरुसं पत्रमंगुळु दुक्त नयि साधन्यां यशस्यमायूषां शोग
 माकयदं गुरु॥ दुस्तु प्रनाशनं पूसां नवना नीवशंक नं स्वाकर्ष हनंद

विस्तृष्टाश्चटकनंभिया॥ ॐ दं क व य म स्तु त्वा वा ऊ वा ऊ व य नो भि वा ॥ या
त्रे यं ज्ञातिनी वृन्दे ४ सर ऊ ना नु सं ग य शा न न स्य म नु सिद्धि स्या कदाचि
दपि म क्त नो ॥ ॐ रु सा क य क नि द्यं त्रा द दू ४ ख र या नि वा ॥ य न वृ न न व
गत्वा य धु या नि म वा प्र या नू न स्या द न सदा स्या स्म द धि का त्री र व रु
त शा म द्ध कु वि नि र्ग त मि दं क व यं स य्त्वं पू ज्ञा वि धि य्थ पू न ना वि धि ३
नाम १० द्र शा सो रा म्म रा ग स सि ना नि यु रा नि नु क्ता द वा ४ प दं रु ऊ

निर्गल्यननककात्वा॥ श्रुतिक्लान्तसंदितायां श्रीप्रियत्रसूत्रगीक
वयसादधीकवयसमार्फशा ॥ श्रीगल्लभयनमशाकेलाभमिश्रयन
भातानानन्तायल्लारिगांकल्यथादयमध्वस्तं नानायुषायल्लसहिनाम
सिमलुपमध्वस्तं मनिगन्धर्वसविता नंकदाचित्सुखासीनं रगवर्तकं
गङ्गुनं॥ कपातरवद्राक्षधनं चन्द्राङ्कनलखनीविष्णुसुखमनूकारं
महावृषरुवाहनी ऊढारूढधनं यवं वासुकीकल्लस्यल्लं विरुगिरुः

२१
षलंदवं नीकल्लं प्रिलायनां दीपवर्मपत्रीधनं शुद्ध हृष्टिकसन्निहं २२
सरुमादिल्यसंकाशं गिनिआडां गरुषल्लं॥ प्रलभ्यगिनसा नार्थं काननं
विष्णुनूपिषां कृताश्रुतिपूढारुत्वा प्राहुर्नमिषिवाहुर्नल्लन्यउवाच
॥ दवदवमहादतमुक्किस्मिन्नककानकालंगनिः सर्वदवानां लंगनि
सर्वदहिनां लंगनिः सर्वल्लोकांनां दानानां च लभवहि। लभवऊगदाध
नल्लभयविष्णुकानल्लं॥ लभवयूक्तं सर्वेषां लयनानां लिभगतिहा किं गुह्यं

पमंताक किमकं सर्वसिद्धिदो॥ किमकं पनमं (अथ) किं हागसूयभाऊदं
॥ विना नीर्थेन न पसा विनादाने विनामखे ॥ किं विस्वयनध्मो न न कः
नसिद्धिमवाप्नुयात् ॥ कस्मादधियनसृष्टिः ॥ कस्मिंश्च प्रसूया रवता ॥ कस्मा
दलोयनयवसंसा नार्त्तसंकरात् ॥ नदहं (अथ) गुमि कुमि कथयस्व मदर्थं न
शांणी ॥ अथ उवाच ॥ साधूसाधूत्वायायुषं ॥ स्यात्पारिनिनन्दना नृसिगुह्यत
मं पृष्ट कथयिष्ये न संशयः ॥ सर्वत्र उक्तमस्ति न बुद्ध्या विष्णुमिवाय ॥ ४॥

वान्प्रवहवात् ॥ ४॥ सर्वप्रकृति संरुवा ॥ सेवदवी महाभाकि म्महावि
पुनसूयनी ॥ सेवयसूयनविष्णुं सेवविष्णुं प्रयात्ता ॥ सेवसंरुनवः
विष्णुं उगद न च नाचनं ॥ अथान ॥ सर्वरुनानां सर्वनामपहानिः
ही ॥ ॥ कृत्वा नथमज्ञानं बुद्ध्या विष्णुमिवास्मि कणा विष्मभाकि स्व
नृपक्षसृष्टिस्ति विनामिनी ॥ बुद्ध नृपक्षसृष्टतु विष्णु नृपक्षयातिव
॥ सेरुनन नृपक्ष उगद न च नाचनं ॥ यस्यात्मे उगं सर्वमद्यायि

वलि नखि ली॥ यस्यां यही यन नान यस्यां न जाय न य न ॥ यं समा न य
 ये ला वी सं प्रा फं पद मूरु मं॥ तस्या नाम सरु मनु कथयामि गृहं न तां
 अस्या यी महा प्रिय न सुन्दरी मनु सरु मना मला वस्या श्री रग वा न य किं
 मूलि वा मय वम पि न य यी वृ न्द ४ सम सु प्र कट गु फ न सं प्र दा य कू ल को ल
 निग क न रु स्या नि वि न्दा य हा वा प्रिय न सुन्दरी य व ता॥ आ का म वी ऊं म
 या य किं ४ काम वी ऊं को ल कं ध मा र्थे काम भां जा र्थे वि नि या ग ४॥ आ

धन न नृ क्ष क वि म सु दृ षं रु म प्र रं वा रु वी वी ऊं म न म ध मि न्द्र (न पः
 सु दृ षं रु लं क ऊं म मि नो च क हा ल म य ग मी क नृ चि न वी ऊं य ता ली य
 कं य ध म य नि प द य रं त व मि व न यं नि भो स्वा य द ॥ ऊं क ल्या ली क म
 ला का ली क पा ली क म नृ पि षी॥ कामा का काम दा का म्या कामिनी काम दा
 नि षी॥ का ल ना वि र्म हा म किं ४ कामिनी वृ ष वा रि नी॥ कौ ली नी॥ को माः
 नी क नृ क्ष की र्ति ४ क लि क ल म ष ना षि नी॥ का रा य नी क हा ध ना को म

दीकमलप्रिया। कीर्तिना वृद्धिदामध्वनीतिरुनीतिवत्सला। मारुष्यत्री
मारुमाया। मारुवज्रा मरुष्यत्री॥ मारुकिङ्क मारुलाला मरुदक्ष मः
लारुजा मरुन्धकात्रिघ्नी मरुभाऊ प्रदायिनी॥ मरुदायिद्रनाशि
घ्नी मरुगवृविनाशिनी॥ मरुअति मरुगकि मरुभाऊ विनाशिनी॥
मरुमायामरुवीर्या मरुपातकनाशिनी॥ मरुमध्वमनुमयी मरुपूः
प्रतिवाहिनी॥ गधमानात्र गधयत्री गधगन्धर्वसुविता गिनिअ गिनि

क्षमाध्वी गिनिरु गिनिमंरवा॥ य^{वीर}बुध्वनी यबुनूपा ययबुनूपा यमाहिनी॥
ययिका ययिना कान ययिका वा नूयिनी॥ यरुष्यत्री यरुनूपा यययरुपनाः
ययमा यरुमाना यरुहा कुी यरुष्यत्री यरुसंरवा॥ सिद्धा यरुक्रिया सिद्धि यरु
गी यरुअकि का यरुयिया यरुनूपा यरुया रूक्रिया तपा॥ ऊर्लं धत्री
ऊगन्माता ऊगवद ऊगप्रिया॥ ऊगवदिय ऊगवद काध्वजननी ऊयदायि
नी॥ गंगमलप्रिया वत्री गंगेनी गंगमनी मरुवृद्धिका॥ ययवायव गङ्गाय नचि

काकवसंरवासिन्मदाकिनीसिद्धा समुनाचसनसनी॥चन्द्रहागमः
पियाभमगवुकिविन्वतासिनी॥नमदाचैवकदूकावगवलयको
शिकामरुन्दननयाचैव अरुहाचयकावनी॥नूयाध्यादानकामा
काकाशीकानि अवनिका॥दानावनीचनीधनीमहाकिस्त्रिष
नामिनी॥यदिनीयदममकासुपदार्किऊकवासिनी॥यदचक्रायय
दाऊीयदासायदमसंरवा॥कौकानीकूषुहीधनीयदरुसुहा

वना॥शीकानीरुषमलकीकौकानीकूषनासिनी॥रुनिधियाहन
मूरुहनिनवकतातया॥रुनिवकुलेवाभका रुनिवकपनिमिता
विष्णुवीविष्णुनूपाचविष्णुमारुसुनूयिही॥विष्णुमायाविष्णुतादीवि
मातनयनाहता॥विष्णुवनीचविष्णुमा विष्णुशीविष्णुनूयिगिभि
वष्णुनीमिवाभावांमिवनाथमिवप्रिया॥मिवाभातामिवाभावा मिवदा
मिवनूयिही॥रुवष्णुनीरुवाभावा रवशीरुववनायका रवमानाही

वर्गमा रुवक शुक नाभिनी रुवयिशा रुवानन्या रुवानी रुवभाहिः
नागीतिवने लक्ष्मसावित्री वृक्षा ली वृक्ष नृपि ली वृक्ष ली वृक्ष दा वृक्ष
वृक्षा ली वृक्ष वादिनी दूर्गमा दूर्ग नृपाय दूर्गति दूर्ग नाभिनी सुगमा
दूर्गमा दूर्गता दयदाग्ध्र दूर्गाय लोका दूर्गति दूर्ग नाभिनी दूर्ग ४ कृतना
भिनी पंचास्या पंचमी पूर्ण पूर्ण धी १० निवासिनी सत्व सु सत्व नृपाय
सत्वदा सत्व सं रुवा नऊ सु सत्व नऊ नृपा नऊ गुण समूह वा नम सु स

नमानृपा नामसी नाम सयिशा नभागुण समूह ना सत्व की नाऊसी
नमी कला का कानि भवाच मूर्ध कानि दन न ना ऊर्ध मासा च मासा
च सम्यत्स न सत्व नृपि ली युग सु युग नृपाय कत्य सु कत्य नृपि ली
नाना नत्त विचित्रा ली नाना रुव रुविना विष्णु भिक्का विष्णु मा ना वि
ष्णु पाग विनाभिनी विष्णु सका निधी विष्णु विष्णु भिक्का विनाच
ना ऊवा कू सु मर्जी का ठा गतिमी कू सु मायमा च गुनां गी च गुर्व

कुरुनावा नूहामिनी॥ सर्वं श्री सर्वदानन्द अनन्दा नन्द वडिनी॥ वी
यिनी सर्वरुतं पूरुतं वरान विनामिनी॥ क्लीना कलमधुसूत सर्वध
मायवमिनी॥ सर्वं गमनवधाय्यायां कंकणकनाधुना सूर्यकाटि
सहस्राह वन्द्यकाटिनि शानना॥ गल्लगकाटि हावधाय विष्णुकाटि
निमोदिनी॥ दावाग्निकाटि कलिनि नूतकाटि नूयिणी॥ समुद्रकाटि
गंहीना वायूकाटि महावहा॥ आकाशकाटि विष्णुना यमकाटिरु

यंकनी॥ मन्त्रकाटि समुद्रागुधकाटि समुद्रिना निष्कलं कानिना
धनिगुधगुधवर्किता॥ नूतकाटि कलुनिता रायनगुधवर्किता॥
विमिश्रविष्णुजननी विष्णुकाटि नूयिणी॥ विगायविगायिणी
रुगुगकाटि कलुवनी॥ ॐ कंकणकलुनमकि॥ क्रियामकि॥ गुचिसि
ना॥ अनिमृतिमयी सखा॥ अनि नूयननिप्रिया॥ सूर्यकाटि महावहा
पंचनखापविहिता॥ पार्वतीहिमवत्युग्री पञ्चमपात्रनूयिणी॥ अरु

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अहं ह्याकृतं नारायण ॥ हृत्तम्राग्रीच हृत्तम्री हृत्तम्रा ह
ववादिनी ॥ महाकृष्णहिनी ॥ किं मरुति हववदिनी ॥ हंसादी हंसा
पाय हंसा हंसा हंसा यिनी ॥ सामसूयाग्निमध्यास मयन विनिवा सिनी ॥ य
हव कुंराज मध्यास स्वाधिस्तन विनिवा सिनी ॥ द्वादशमनसना ऊस्तसू
यो मधुहवा सिनी ॥ अक संकाशकां च वागमन विनिवा सिनी ॥ द्विप
ग्रह हंसा मध्यास वहाट हने वा सिनी ॥ गकिनी वाकिनी चैवा हाकिनी क

किनी नथ ॥ गकिनी हाकिनी चैवा ॥ षट्प कथा न वा सिनी ॥ सुषिस्तिनि
विनाशाय ॥ सुषिस्तिन क कात्रिणी ॥ श्रीकृष्णिया श्रीकृष्ण नादा स्वा
विन्दु वा सिनी ॥ वगुषयि कलाक्ष नाद हृदय सुमाधया ॥ माया का
ली ॥ किं मध्यास सुषागुष्टि मरुति हादिंगुला मंगला सीता सुषमा
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यनाद्या नाक वा हादी विजया ऊय गम सिनी ॥ हृत्य द
नसया हीमा महा हंसा वनादिनी ॥ आकाश हिंगमं रुना गुवनादी

ह्यसंकाशकि नक्षत्राक संकृता ॥ ऊटा कूट प्रजापुष्पा शुष्कमांस
निहीषधमा ॥ द्वीपिचर्मपत्रीधमा वीनवल्कलकानिधो ॥ विष्णुहस्त
मन्त्रधमा ननमासा विरुषधमा ॥ अर्यग्रवृषिधीवाग्म कल्याकटकः
नायमापिहाकसाधनीसाध्यामिद्धि साधकवत्सला ॥ सर्वविशामयी
सात्रा वीनवका विद्याविधी ॥ सुरगमसूमुखीमो स्या सुखजामरुष
हमा ॥ सुद्वस्तुटिकर्माकाशमहावृषरवाहिनी ॥ मरुणीमहिषावृद्धा

गदानन्दरुं मे ता म्भिका मभिगुह्य कना ॥ वेला क्वा वायिधी गु श्या वि
नया दधु नूयिधी ॥ वेला क्वा नन्दिनी दवी दूष्य दानिद्रना धिनी ॥ धाना
मिदा रुम मनी जाऊ दवानि गमिनी ॥ मला यना धम मनी मुला जीन रुया
पला ॥ नागम दिदा प्रहिता ऊना म नद्य व किता ॥ यद्य मधु मधु मधु पी
यूषा र्हे वे सं रु वा ॥ सर्व दवे मु ता दवी सर्व सिद्धि न मस्तु ना ॥ अविश्व
धा कि नू पात्र मभि मन्म मलोषयी ॥ स्वस्ति स्वस्ति मनी वासा महसा च ल वासि
नी ॥ धा ग्री वि धा ग्री सं रु ना ॥ नति रु नति दायिनी ॥ नूदा ग्री नूद नू पात्र जी

वी नू दारि ना धिनी ॥ सर्व रुय व धर्म रु धर्मात्मा दीन स्मृता ॥ नू ना रुः
ना वि शय ना चिद् दानि गुह्य मिता ॥ धन धि धा निधी य थी धना धम
गी व सु न्ध ना ॥ भनू मन्दि न मधु स्तु कि न मं क न व न्द्र हा ॥ श्री मति ४ श्री म
यी रुय रु श्री कनी श्री वि रु विनी ॥ श्री दा श्री धम श्री नि वा सा श्री कनी श्री मनी
गति ४ ॥ उ मा सा न कि नी कृष्ण कृमि हा कृ स चाल का ॥ प्रिला य ना विः
हा का सा पूष्य दा पूष्य की र्हि दा ॥ अमृता सल मं क त्या स न्या स गृ नू रु द

नी॥ यत्र भगीयत्र माना यत्रा विद्यायत्रा कजा॥ सुन्दरा ह्री सुवर्णा
सुजा सुत्र नमस्कृता॥ यत्रा यत्रा यती धन्या यत्र धनो समृद्धि द्या॥ ॐ
नी रुवने भनी रुवनी एव न च नी॥ ज्ञानका नन महिमा ऊगत्माना ऊ
गत्पुला श्रुति कृष्ण किचिका सा चिका चिकु सवृषिणी॥ ज्ञानगम्भा
नमूर्ति ज्ञानिनी ज्ञान भालिनी॥ अहिताद्या नूपाय सुधम धना सुधा
वला॥ हासनी हासनी हीनि॥ हास्यं गानू भालिनी॥ ज्ञान सुधा कृमा

सुजा दुर्ज्ञा हासनामिका॥ विष्णव न्या विष्णवो नी ना विष्णव्यो
दकृत् संहिता॥ शील सुशील नूपाय शील शील प्रदायिनी॥ वाधिनी
वाधकृष्णता वाधिनी वाधिनी नधमा॥ विद्यावनी विचित्रात्मा विद्युत्प
टसु सन्निहा विष्णवार्निर्मलायति॥ कर्मशानि प्रियं वदा॥ नाहिनी हाग
मममी महा याग कृत्वा यहा॥ सदा पूष्टि नदादवी मनदा मानव प्रियामक
प्रांगवाहिनी च व कृष्ण कृष्ण सुहादना॥ अरुवीर्गं रुनूपाय र्गं रुसु

मं दु सं ह वा वि ल्प ह नी या ग मा या या ग मू दा य या गि नी ॥ वा गी द्य
नी या ग नि दा या गि नी को टि स वि ना को लि नी न न्द का ना या गू र पी
० नि वा सि नी ॥ क मं क नी सि द्ध नू पा दि वा नू पा दि गी ह नी ॥ क्र म नू पा
क्र म व धू धू म न वा व धू स ना ॥ यि ना कि नू द वे ना ली म हा वे ना ल नू पि
घी ना पि नी ना पि न द द्वा वि शू वि द्या सि का शि ना ॥ मं ध ना ऊ ० ना ती
ना अग्नि जि द्वा र या य रु ॥ प धू धी प धू नू पा य प धू रु प धू वा दि नी
॥ पि ना मा ना य ध ना य प धू पा य वि ना शि नी ॥ य न्द्र य रा य न्द्र न मं व

नू का नि वि रु प ण ॥ कं क मा नि न स वं गी सू धा व द्ध ला य ना ॥ गु क्ता
नां व न य ना य दी वि धा य सू क षा नि नी ॥ ल्प न य द्वा स ना य दी ॥ ल्प न य
द्वा स न सि ना न का म न य ना य दी न क य द्वा वि ला य ना ॥ नि लू ना क नः
द द या अ कू ना मि दि ला वि नी ॥ आ का म लिं ग सं रु ता नु वे ना द्या न
वा सि नी ॥ म हा सू द्वा य कं क ली ही म नू पा म हा व ला ॥ अ नो य म्मा गु ष
ध ना स दा म धू न ला य धी ॥ वि नू पा की सं रु म्मा की य ना की व लु लाः

यद्मयी यद्वा सर्वमनुप्रिकात्रिणी॥ सर्वमनुप्रतिष्ठाता सर्वविद्रा
 विधायना॥ सर्वसंका रणीयदी सर्वसंगलकात्रिणी॥ सर्वसंभादिनी
 हाकि सर्वसंरुनकात्रिणी॥ त्रैलोक्यकृमिनीयदी तथमसर्ववर्गकनी॥ त्रैल
 कात्रिणीयदी सर्वान्मादयन्नूयिनी॥ सर्वार्थसाधनीयदी सर्वसंपत्त्यदायि
 नी॥ सर्वमृगप्रमत्नी सर्वविद्यविनाशिनी॥ सर्वगन्धनीयदी सर्वसो
 हाग्न्यायिनी॥ सर्वज्ञसर्वगकिञ्च सर्वव्ययोरुत्पदा॥ सर्वज्ञानमः

सु २

यदीयदी सर्ववाधिविनाशिनी॥ सर्वोभानस्यनूयात्र सर्वपापहननध
 ॥ सर्वानन्दमयीयदी सर्वत्रकास्यनूयिणी॥ सर्वलक्ष्मीमयीयदी सर्ववि
 गरुत्पदा॥ सर्वदृष्टप्रमत्नी सर्वानन्दप्रदायिनी॥ त्रिकाक्षनित्या
 तिस्रः त्रिपूनायनमानिका॥ त्रैविद्यात्रयीमाना त्रैलोक्यकृमिनादना
 त्रिवर्णद्विपदात्रिस्रः त्रिमूर्तिसिगुल्लनी॥ त्रिध्वनीत्रिदशग्रुहवि
 द्भिर्विपूनावासिनी॥ त्रिपूनाभीविजननी त्रिरुसिपूनासुन्दरी॥ ॐ

[illegible]

धनं॥विद्यार्थीहरनविद्यांयथार्थीहरनयथाकन्याधीहरनक
न्यांअपग्रीहकनान्विनशागुर्विधीऊमयत्युग्रंकंन्याविन्दनिसत्य
दिमूर्खोपिहरनभामुर्वीनापिहरनगति॥संक्रान्तीचवगुर्दक्ष
मवृम्यांविचित्रयनशापोद्गुमास्याममावास्यांनवम्यांकीमवासन
॥य०दाया०यदापिभृष्टयादासमाहित॥समूकंसर्वपापस्य॥
कामधनसमाहरवत्सलक्ष्मीवान्मनवांल्लेखवत्सल॥सर्वपापिनी॥

नस्यवसंहरवदागुपेलाकै सत्रनाचनानूदं दष्टा यथादवाविषुंदष्टा
यदानवाशापन्नगमनूतंदष्टा सिंदंष्टा यथागतामधुकाशगिनींद
ष्टा माऊले मूषकायथा कीटवत्यवलायन नस्यव कुविहाकना
ना अग्निवीनरयनस्य कदाचिन्नवसमृवनायावाकावि विभ्रः स
निभयमन्दिनसन्निहाहा रमी रवांननसर्व हेवविद्रिदू नयथा न
कधाय ० नादव सर्वपायक्षया रवना नागमभ्रहाकानस्य नि दगध

वर्लेनरवना गतधवर्लेननेव वायां सिद्धि मवा प्रयाता सरुमं प्र ऊ
पदागु इवेचना जायनत्रिनाता ॥ सरुमुठानकं यमुप ० रुकिपनाय
दाहा सातस्य ऊगनां धवी प्रत्य का रवनिधुवं ॥ सकेयुर्न यदायुगु
वनाऊं य ० सुधी ० सर्वपाय विनिर्मूका ममगु ल्या मल्लियन ॥ सर्वती
र्थप्रयत्युधं सर्वपक्ष प्रयत्नं ॥ सर्वधर्म प्रयाधर्म ० सर्वधर्म प्रयत्न
ही ॥ सर्वदवप्रया केषु सुनरु संप्रितीर्लेन ॥ नत्का टि गुहिनं प्रः

३२
 ध्यां सकृदुक्ता स रुद्र नशां शुक्लामरुमाव सवान् पृथुवा सर्वसि
 द्विमान् रुद्रवै ॥ यद्वा कथय मस्तु नं अस्तु नत्रपि दूत हं । सया सायं ति ३
 वै संदरु सुवसा साय कीर्तनात् ॥ ॥ ॐ ति ध्यां विपुन सुन्दरी सह
 मुनामस्तुं समार्यं शा विपुन सुन्दरी प्रीता तु ॥ ॥ अथ मनु सिद्धि त्रपाय
 ॥ अथ वक्रज ग धि मनु सिद्धि तु का नदी । यत्कु ला धा ध क व नो ला
 कथय स्युजि नशां आ दी धात्री नं सचि न्नु यानि मूडा वि हा व य न्

अं अरु द्रु ॥
 मनु धां रुद्र नं सु नं व सा द रुद्र न श न न्नां मनु क ना धि वै कु म सु उ
 द्वा रा या ज न न न्नां व क्ते क म नु व द्वा रा मा धि का या म रु द्र वी पृठा
 क रुद्र न न ४ य ४ म रु अ नू ला म वि ला म न्नां अ य न्ना ना रि स र्वा न या व
 न न्नां रुद्र व लि या न न ४ स म रु न न वै क या दि धि नं उ क व न न्नां ॐ
 नि न क थि नं द वि यानि मूडां सून रुद्र वि न नै व क थि नं स शी म नु धु
 द्वि म या दि ना या व द्वा रा रुद्र व न्ना वि रुद्र ग न्ना थ यानि मूडां म या रु

नांनयेवदिमरुसाधं मनुगुडिं कुमनहि। ॐ दानिंकुपयानाथ म
नुधर्मं सुनमूयतां। कीदर्थं वायानिचकु मनुवाकु वृष्टिं नि। कनमा
लनन को ॐ शिवाकन स्याग मागमशा भिवउ वाचा मृदुदवि मरुहाला
साकनामनासिं नि। कथयामितवसेरु सावधना वधनया ज्ञायो पूम
कया गन आधन आयय नमनं तावयत वृदवमि वि काधं यानि न
कुनिश नउ सत्यत मावरा यानि मधुसल्लारि ता ॐ कुरुन क

आदवि निष्ठानि न प्रनिर्गुणशा य द्वावि प्रमरुगम्य ॥ ४४ ॥ कुरु सन
संस्ति ता। मल्लम्य यं नुलिंग नु काटि सूर्य समग्र हं गदू ध्रुव काम
वीज नु कलशां नीन्दनादकं गदू ध्रुव मिखाका ना कुरु लीव द्वावि
ग्रहा गदा कुरु मवधुं रं वधवधुं च गुरुदं ली गफरु मसमय कुरु यमं
गदु विरावयता मूलाधन मयि धाका ना मूलाधनं नता विदुः
। गयेत भाकि नीं भाकि सुधुवधुं धियवता गदू ध्रुव लिंग मूनु स्वाधि

वहमयनल
वहनयमरु १

४ कवगयदवकुजमअ८०

कानमरुत्युहां वलनर्षपदयुक्तं विश्ववर्षयुक्तं तदुक्तं नाकि
नीशकि सुदाकारं विहावयता तदुक्तं नाहिद (शुभमधिपूतं सुनील
कं) ताकिनीशकि सुदुवतदोकारं विहावयता तांदि रुक्तं दशदल
कधिगंशमूनस्येति तदुक्तं नाहर्गंशकं उद्युतादिहमन्निहां कादि
भक्तदलेनकं यदुक्तं सुदुनिनूयकं काकि न्याखा सुदुशकि ४ का
लाशुभंशुमासिनी तदुक्तं कष्टद (शुभ) विशुभंशुमनाहर्गंशं प्राउर्गं

अन्ना नूनं
उदधतधदधनधरु ४

दधनरु २

नंशुभवर्ष आदिसन्नीवनननं तदुक्तं नाकि नीशकि ४ सर्वोहित
दुरुतयदहातदुक्तं रुद्रा म (शुभ) आरुवकुं म (धरु) नां दादिह
नंशु (धो) धनं दिवर्षं रुद्रसंयुतां तदुक्तं नगनादवी लाकि नीगुनः
वर्जिता अववर्षावयकुधिप्राकानिगतसुवता ००० ननकधि
नंदविमला द्वा नक्षमूर्कम ००० दानी कधयिष्यामि यागमार्थमनूक
मं विष्णुशनीनं मिश्रकं यं वरुतात्मकं प्रिया चन्द्रसूर्याग्निदजा

लिङ्गीववृक्षेकत्रयकं। निष्ठुकाद्युतदध्वं च। श्रीननादयथा मना
। तावुमखादहायाका। तावुनिमावावलिना। वृतावामस्मितानाती
ठुकाद्युचन्द्रत्रयिणी। किं नूपाद्युमानाती। साक्षादमृतविग्रहाद
किं धीयिगतास्वाता। यं नूपासु योविग्रहासु। मन्मथमनाती। सर्व
तजसिनीमना। तस्यामल्लघुचित्रास्वा। मृतमविनीमना। तस्या
मल्लविचित्राद्यु। यागीनां द्वादशंगमा। तन्मा। तन्मदवशि। श्री

मायकाक्षी। विलम्बिता।

द्वयस्य गमागमा। दुर्जगीयासमास्वाता। माहकार्णवृक्षेद्वयकं। तव
लंमकुं मूलमं मनुमृदु। लवयशि। लावयश्चिन्मयददियाते मनुसेवद
वा। दवसा। कातुत्रयय। तथस्मानं चिदाकारं। लावययनमान्मनि। याव
धुतिनीवधूसि। काव। अकमाहा। कका नमनू॥ आ। नारुनं नदनूला
मसंरुं। विला। मसंरुं। दुप्रति। नारुनं स्यात्। एवंकुं ददवा नना। स्वा। मा
सिकां रवत्। अस्वावलिं। कपत्यश्म। मृदुतद्वनिगशत। एवयूक
नमसिद्धं अन्ना कस्यग।